

भीलवाड़ा फोकस

भीलवाड़ा की बात, फोकस के साथ.....

RNI No. : RJHIN/25/A0890

वर्ष - 01 / अंक - 332 / बिजौलिया - सोमवार, 15 जून, 2026 / मूल्य - 1 रुपया / मो.- 86967 95959 / पृष्ठ - 4 / WWW.BHILWARAFOCUS.COM

करोड़ों का रेलवे स्टेशन, फिर भी वीरान!

जनप्रतिनिधि जागें तो जागे ऊपरमाल का विकास, वरना सपनों का स्टेशन यूं ही रहेगा सुनसान

रेलवे स्टेशन बन गया, लेकिन रास्ते नहीं बने... करोड़ों खर्च हुए, मगर यात्रियों की राह आज भी अधूरी है



भीलवाड़ा फोकस @ भीलवाड़ा ।

कपिल श्याम विजया। जिले में करोड़ों रुपए की लागत से निर्मित ऊपरमाल रेलवे स्टेशन आज भी अपनी उपयोगिता साबित करने के लिए संघर्ष कर रहा है। क्षेत्र के लोगों के लिए बेहतर रेल सुविधा और विकास की उम्मीद लेकर बना यह स्टेशन बुनियादी सुविधाओं के अभाव, खराब सड़क संपर्क और जनप्रतिनिधियों की उदासीनता के कारण अपेक्षित पहचान नहीं बना पाया है। हालात यह हैं कि करोड़ों रुपए खर्च होने के बावजूद स्टेशन पर यात्रियों की संख्या सीमित है और अधिकांश लोग आज भी भीलवाड़ा तथा कोटा रेलवे स्टेशन पर निर्भर हैं। उँदरो का खेड़ा स्थित ऊपरमाल रेलवे स्टेशन बिजौलिया नगर से लगभग 12 किलोमीटर दूर है, जबकि नगर पालिका सीमा से इसकी दूरी मात्र 5 किलोमीटर है। रेलवे ने स्टेशन के प्लेटफॉर्म का विस्तार कर आधुनिक स्वरूप तो दिया, लेकिन स्टेशन तक पहुंचने के लिए सुगम सड़क और परिवहन व्यवस्था विकसित नहीं हो सकी। परिणामस्वरूप क्षेत्रवासी इसका अपेक्षित लाभ नहीं उठा पा रहे हैं।

पीने के पानी जैसी मूलभूत सुविधा भी नहीं
यात्रियों की सुविधा के लिए बनाए गए स्टेशन पर आज भी पीने के पानी की समुचित व्यवस्था नहीं है। प्लेटफॉर्म पर एक भी वाटर कूलर उपलब्ध नहीं होने से गर्मी के दिनों में यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि जब तक स्टेशन पर मूलभूत सुविधाएं नहीं बढ़ेंगी, तब तक यात्री संख्या में वृद्धि की उम्मीद करना मुश्किल है।

35 वर्षों बाद भी अधूरी उम्मीदें

वर्ष 1991 के आसपास इस रेल मार्ग पर ट्रेन संचालन शुरू होने के बाद क्षेत्रवासियों को उम्मीद थी कि ऊपरमाल क्षेत्र को रेल संपर्क के जरिए नई पहचान मिलेगी। देशभर में प्रसिद्ध सैंड स्टोन उद्योग, व्यापारियों, विद्यार्थियों और नौकरीपेशा लोगों को बेहतर आवागमन सुविधा मिलने की संभावना थी, लेकिन तीन दशक से अधिक समय बीत जाने के बाद भी स्टेशन अपनी पूरी क्षमता के अनुरूप विकसित नहीं हो पाया है।

स्टेशन अधीक्षक ने बताई समस्याएं

स्टेशन अधीक्षक बनवारी लाल ने बताया कि स्टेशन पर कई मूलभूत समस्याएं हैं। प्लेटफॉर्म की लंबाई पर्याप्त नहीं है तथा यात्रियों के लिए वाटर कूलर जैसी आवश्यक सुविधा भी उपलब्ध नहीं है। उन्होंने कहा कि यदि बिजौलिया से स्टेशन तक बेहतर सड़क और परिवहन सुविधा विकसित की जाए तो स्टेशन की उपयोगिता काफी बढ़ सकती है। उन्होंने बताया कि स्टेशन पर ट्रैफिक विभाग का नौ सदस्यीय स्टाफ कार्यरत है तथा वर्तमान में प्रतिमाह लगभग 800 से 900 यात्रियों का आवागमन होता है। आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध होने पर यह संख्या कई गुना बढ़ सकती है।

रेलवे कर्मचारियों को भी झेलनी पड़ रही परेशानियां

स्टेशन परिसर में बने रेलवे कर्मचारियों के क्वार्टर भी जर्जर हालत में हैं। बारिश के दौरान छतों से पानी टपकता है और कर्मचारियों को पेयजल संकट का सामना करना

पड़ता है। वर्तमान में बोरिंग के पानी की सप्लाई की जा रही है, जो फ्लोराइडयुक्त होने के कारण पीने योग्य नहीं माना जाता। विडंबना यह है कि स्टेशन के समीप से चंबल पेयजल परियोजना की पाइपलाइन गुजर रही है, लेकिन स्टेशन को उससे जोड़ने की कोई व्यवस्था नहीं की गई है। यदि स्टेशन को चंबल जलापूर्ति से जोड़ दिया जाए तो वर्षों पुरानी पेयजल समस्या का समाधान हो सकता है।

ऊपरमाल का प्रमुख रेल केंद्र बनने की क्षमता

वर्तमान में ऊपरमाल क्षेत्र के अधिकांश लोग रेल यात्रा के लिए भीलवाड़ा और कोटा रेलवे स्टेशनों पर निर्भर हैं। मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, पश्चिम बंगाल सहित देश के विभिन्न हिस्सों में जाने के लिए लोगों को पहले कोटा या भीलवाड़ा जाना पड़ता है। क्षेत्रवासियों का मानना है कि यदि स्टेशन का समुचित विकास किया जाए, अधिक ट्रेनों का ठहराव सुनिश्चित हो तथा बिजौलिया से स्टेशन तक बेहतर सड़क का निर्माण

कराया जाए तो यह स्टेशन पूरे ऊपरमाल क्षेत्र का प्रमुख रेल केंद्र बन सकता है।

पर्यटन और व्यापार को भी मिलेगा बढ़ावा

ऊपरमाल रेलवे स्टेशन का विकास क्षेत्र के पर्यटन को भी नई पहचान दे सकता है। स्टेशन से पार्श्वनाथ तीर्थ, जोगगिया माता शक्तिपीठ, तिलस्वा महादेव, मेनाल झरना, भीमलत वॉटरफॉल, सीता का कुंड महादेव, मंदाकिनी, सेवन फॉल और भड़क जैसे प्रसिद्ध धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों तक पहुंच आसान हो सकती है। इससे स्थानीय व्यापार और रोजगार के नए अवसर भी विकसित होंगे।

फिलहाल चार ट्रेनों का ही ठहराव

वर्तमान में स्टेशन पर चित्तौड़गढ़ दिशा की ओर यमुना ब्रिज-रतलाम एक्सप्रेस और कोटा-मंदसौर एक्सप्रेस का संचालन होता है, जबकि कोटा दिशा में मंदसौर-कोटा पैसेंजर तथा रतलाम-यमुना ब्रिज एक्सप्रेस संचालित हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि यहां और ट्रेनों का ठहराव बढ़ाया जाए तो यात्री

संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है।

जनप्रतिनिधियों की पहल का इंतजार

क्षेत्रवासियों का कहना है कि ऊपरमाल रेलवे स्टेशन के विकास के लिए बेहतर सड़क संपर्क, पेयजल सुविधा, यात्री सुविधाओं का विस्तार और अधिक ट्रेनों के ठहराव की आवश्यकता है। उनका मानना है कि यदि जनप्रतिनिधि इस दिशा में गंभीर पहल करें तो करोड़ों रुपए से बना यह स्टेशन केवल रेलवे स्टेशन नहीं, बल्कि पूरे बिजौलिया और ऊपरमाल क्षेत्र के विकास का नया द्वार बन सकता है।

‘स्टेशन तैयार है, अब विकास की ट्रेन का इंतजार है’

क्षेत्र के लोगों की मांग है कि वर्षों से उपेक्षित इस रेलवे स्टेशन को सुविधाओं से जोड़कर इसे क्षेत्र के विकास का केंद्र बनाया जाए। क्योंकि यदि ऊपरमाल रेलवे स्टेशन विकसित होगा तो पर्यटन, व्यापार, रोजगार और आवागमन सभी क्षेत्रों में नई संभावनाओं के द्वार खुलेंगे।

